www.futuresamachar.com ISSN 2278-7933 PRICE : Rs. 50/-

All India Federation Of Astrologers' Societies

Research Journal of Astrology

VOL: 19 NO. : 1 Jan. - Mar. 2021

Predicting Child Birth Accurately

व्यवसायी बनने के योग

सरकारी नौकरी योग

अष्टकूट मेलापक

मेलापक में मंगल का प्रभाव

उदर रोग में ग्रह योग की समीक्षा

Off. : A-3, Ring Road, South Ex. Part-1, New Delhi-49
Branch Off. : B-237, Sector-26, Noida (U.P.) - 201301
Ph : 11-40541000, 40541004, 40541020, 40541028
www.aifas.com, www.futurepointindia.com

Contents

From the Editor's Desk

10 Editor's Desk — By Dr. Arun Bansal

Research

12 **Predicting Child Birth Accurately** — By Tanvi Bansal

Review

22 **Hindu Puranas** — By R. Harishankar

शोध

24 **व्यवसायी बनने के योग - शोध परिणामों का परीक्षण** — सुशील अग्रवाल

30 **सरकारी नौकरी योग : ज्योतिषीय विश्लेषण** — ओम प्रकाश शर्मा

36 **अष्टकूट मेलापक** — वनीत शर्मा

39 **मेलापक में मंगल का प्रभाव** — सचिन आत्रेय

44 **उदर रोग में ग्रह योग की समीक्षा** — अर्चना शुक्ला

समीक्षा

48 **ज्योतिष एवं शिक्षा** — पं. दयानंद शास्त्री

50 **विवाह रेखा से जानें विवाह के योग** — डॉ. अमित कुमार राम

53 **वास्तुनुकुल है कन्याकुमारी का मंदिर** — कुलदीप सलूजा

56 **कारको भावनाशाय - एक भ्रमपूर्ण सिद्धांत** — नरेश चन्द्र

'व्यवसायी बनने के योग'-शोध-परिणामों का परीक्षण

प्रो. डॉ. चन्द्र कान्त शर्मा, प्रोफेसर ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तोड़गढ़, राजस्थान
सुशील अग्रवाल, शोधार्थी, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तोड़गढ़, राजस्थान

1. विषय प्रवेश

जीविका-यापन के दो मुख्य स्रोत हैं- व्यवसाय और नौकरी। व्यवसाय में अधीनता का भाव नहीं होता, इसीलिए अच्छे-अच्छे पदों पर आसीन व्यक्तियों के मन में भी व्यवसायी बनने की प्रबल इच्छा होती है, परन्तु जाँचे-परखे ज्योतिषीय सूत्रों की कमी के कारण जातकों का उचित ज्योतिषीय मार्गदर्शन नहीं हो पाता। ज्योतिषीय सूत्रों की कमी का मुख्य कारण यह है कि प्राचीन समय में इनकी आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने पारिवारिक आजीविका उपार्जन-साधन का निर्वहन करने के लिए बाध्य था। ज्योतिषीय ग्रन्थों में इसी अभाव के निराकरण हेतु 'व्यवसायी बनने के योग' विषय पर शोध किया गया। यह शोध, अनुप्रयुक्त शोध (Applied Research) है क्योंकि इसमें व्यवसायी बनने के योगों का निर्धारण किया गया है जो ज्योतिष क्षेत्र की एक आधुनिक समस्या है।

2. लेख की विषय-वस्तु

इस शोध के अंतर्गत 1008 जातकों की कुंडलियों को एकत्रित किया गया। सभी आँकड़े पूर्ण रूप से प्रामाणिक हैं। इन 1008 कुंडलियों में से 504 कुंडलियाँ व्यवसायियों की हैं और 504 नौकरीपेशा जातकों की। इसके अतिरिक्त, इस शोध में केवल 40 साल की उम्र से अधिक जातकों के आँकड़े ही सम्मिलित किये गए हैं क्योंकि अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि जातक कुछ वर्षों की नौकरी के पश्चात् व्यवसाय आरम्भ करते हैं या कुछ वर्षों के व्यवसाय के बाद नौकरी में आ जाते हैं।

साहित्यिक सर्वेक्षण के आधार पर शोध में कुल 69 परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया और उन्हें 1008 कुंडलियों पर परखा गया। आकलन का दायरा विस्तीर्ण रखा गया, जिससे परिकल्पनाओं के परिणामों के साथ-साथ नवीन सूत्रों के उभरने की संभावना भी रहे। परिणाम में अनेक साहित्यिक सूत्र सिद्ध हुए और उपलब्धि के तौर पर नवीन सूत्र भी प्राप्त हुए।

इस लेख में शोध के अंतर्गत प्राप्त निष्कर्ष और उपलब्धियों में से 20 मुख्य योगों का चयन करके 20 नवीन प्रारूपों पर प्रयोग किया जा रहा है। इन 20 नवीन प्रारूपों में से 10 प्रारूप व्यवसायियों के और 10 नौकरीपेशा जातकों के हैं।

3. परीक्षण का परिणाम

3.1 व्यवसायी

प्रयोग में लिये गए व्यवसायियों के नवीन प्रारूप निम्न हैं :

क्रम	जन्म तारीख	जन्म समय	जन्म स्थान	जन्म राज्य
1	11-April-1971	19:55:00	रेवाड़ी	हरियाणा
2	23-January-1977	16:30:00	लखनऊ	उत्तर प्रदेश
3	17-April-1955	15:20:00	कानपुर	उत्तर प्रदेश
4	14-August-1968	11:45:00	इरोड	तमिलनाडु
5	21-January-1964	16:00:00	आगरा	उत्तर प्रदेश
6	07-October-1972	17:45:00	हरिद्वार	उत्तराखंड
7	06-December-1976	23:45:00	कोयमबटूर	तमिलनाडु
8	13-January-1977	18:30:00	सहारनपुर	उत्तर प्रदेश
9	27-October-1974	00:30:00	जमशेदपुर	झारखंड
10	04-October-1953	19:00:00	नई दिल्ली	दिल्ली

व्यवसायियों के उपरोक्त 10 प्रारूपों का मुख्य 20 योगों पर आकलन करने के बाद निम्न परिणाम ज्ञात हुए। निम्न सारणी के प्रथम कॉलम में योग संख्या, द्वितीय कॉलम में व्यवसायी बनने के योग, फिर 10 कॉलम में नवीन प्रारूपों का क्रम और अंतिम कॉलम में एक संख्या वर्णित है, जो यह दर्शाती है कि यह योग कितने प्रारूपों पर सिद्ध हुआ।

योग संख्या	व्यवसायी बनने के योग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	कुल
1	सूर्य - मेष वृष मीन में	12		1					2			3
2	सूर्य - VI, VII	6					7		7		7	4
3	चन्द्र - सिंह, वृश्चिक मकर में			10							5	2
4	चन्द्र - VII, X, XI, XII में				7	10	7	10				4
5	मंगल - मेष, वृषभ, मीन में			2					1			2
6	मंगल - IV, VII, VIII, X में		7	10	10	8	7	4				6
7	शनि - VII, IX, XI, XII में	7			7			12	9	12	7	6
8	बृह. - मेष, वृष, मिथुन, कुम्भ, मीन में		1	3		12		2	2	11	3	7
9	शुक्र - मेष, वृष, मिथुन, धनु, कुम्भ में	11	11	11		11			1			5
10	शनि - IX से संबंध	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	10
11	लग्नेश - VI, VII, XI में		7		11				6			3
12	द्वितीयेश - V, VI, VII, VIII में			8			7	5	7		5	5
13	तृतीयेश - IV, VII में			7						4	7	3
14	एकादशेश - IV, VI, VIII, X में	6		8	10	8				4		5
15	द्वादशेश - VI, IX, XII में		9	6	9	9			6			5
16	चन्द्र से बुध II, III, V, VI, X में		3	3	5	10	2		2	10	3	8
17	चन्द्र से शुक्र I, V, VI, VII	5	1		5				1		1	5
18	चन्द्र से राहु IV, VIII, IX, XI, XII में	4	9	12	12	4	4					6
19	बुध से शनि IV, VIII, IX		8	8	9		8	4	4	9		7
20	शनि से राहु III, IV, V, VI, VIII		4	3		6	8	4	3	6	4	8

उपरोक्त परिणाम को बार-चार्ट के माध्यम से निम्न रूप से दर्शाया जा सकता है। Y-एक्सिस में क्रमशः 1 से 20 योगों की संख्या है। उदाहरण के तौर पर हमने देखा कि योग 10 सभी कुंडलियों पर लग रहा है, तो उपरोक्त तालिका में संख्या 10 देखेंगे तो शनि का नवम भाव से संबंध का योग है। X-एक्सिस कुंडलियों या प्रारूपों की संख्या है।

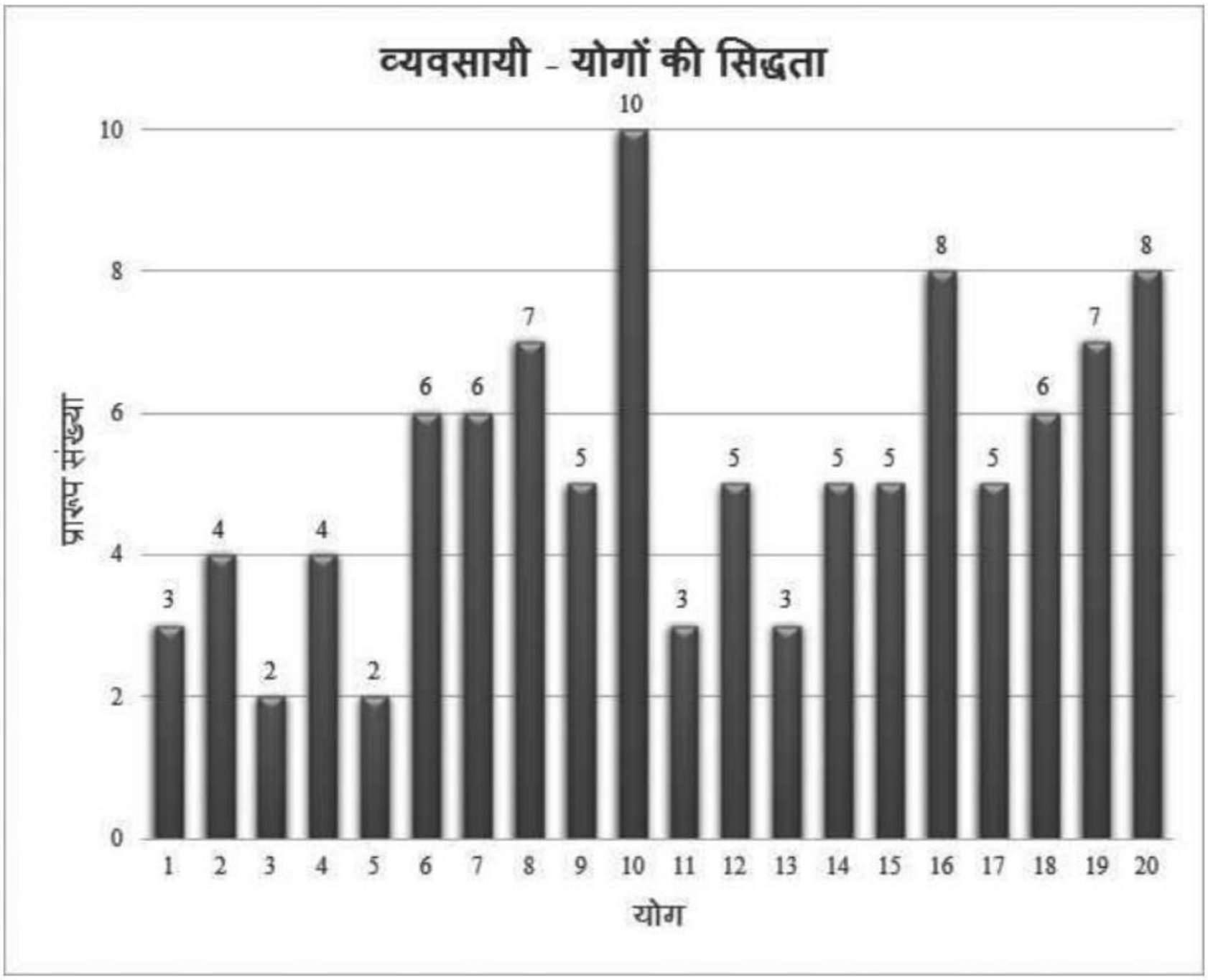

3.2 नौकरीपेशा

प्रयोग में लिये गए नौकरीपेशा जातकों के नवीन प्रारूप निम्न हैं:

क्रम	जन्म तारीख	जन्म समय	जन्म स्थान	जन्म राज्य
1	10-February-1966	08:15:00	नई दिल्ली	दिल्ली
2	01-September-1977	23:45:00	नई दिल्ली	दिल्ली
3	06-October-1977	16:00:00	नई दिल्ली	दिल्ली
4	25-November-1955	10:00:00	नई दिल्ली	दिल्ली
5	30-August-1957	07:00:00	भोपाल	मध्य प्रदेश
6	18-July-1969	10:05:00	कानपुर	उत्तर प्रदेश
7	25-August-1972	03:15:00	नई दिल्ली	दिल्ली
8	23-January-1968	01:15:00	आगरा	उत्तर प्रदेश
9	25-January-1962	05:25:00	लखनऊ	उत्तर प्रदेश
10	12-March-1970	08:30:00	कलकत्ता	पश्चिम बंगाल

नौकरीपेशा के उपरोक्त 10 प्रारूपों का मुख्य 20 योगों पर आकलन करने के बाद निम्न परिणाम ज्ञात हुए। निम्न सारणी के प्रथम कॉलम में योग संख्या, द्वितीय कॉलम में व्यवसायी बनने के योग, फिर 10 कॉलम में नवीन प्रारूपों का क्रम और अंतिम कॉलम में एक संख्या वर्णित है, जो यह दर्शाती है कि यह योग कितने प्रारूपों पर सिद्ध हुआ।

योग संख्या	व्यवसायी बनने के योग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	कुल
1	सूर्य - मेष वृष मीन में											0
2	सूर्य VI, VII											0
3	चन्द्र - सिंह, वृश्चिक मकर में											0
4	चन्द्र - VII, X, XI, XII में		11									1
5	मंगल - मेष, वृषभ, मीन में		2								1	2
6	मंगल - IV, VII, VIII, X में											0
7	शनि - VII, IX, XI, XII में			7	12			11				3
8	बृह. - मेष, वृष, मिथुन, कुम्भ, मीन में	2	3	3								3
9	शुक्र - मेष, वृष, मिथुन, धनु, कुम्भ में				9		2	3	9			4
10	शनि - IX से संबंध		9		9							2
11	लग्नेश - VI, VII, XI में			7								1
12	द्वितीयेश - V, VI, VII, VIII में			5					5			2
13	तृतीयेश - IV, VII में											0
14	एकादशेश - IV, VI, VIII, X में	4							4			2
15	द्वादशेश - VI, IX, XII में											0
16	चन्द्र से बुध II, III, V, VI, X में							6		6		2
17	चन्द्र से शुक्र I, V, VI, VII	5						5		6		3
18	चन्द्र से राहु IV, VIII, IX, XI, XII में	9			9							2
19	बुध से शनि IV, VIII, IX											0
20	शनि से राहु III, IV, V, VI, VIII	4								6		2

उपरोक्त परिणाम को बार-चार्ट के माध्यम से निम्न रूप से दर्शाया जा सकता है। Y-एक्सिस में क्रमशः 1 से 20 योगों की संख्या है। उदाहरण के तौर पर हमने देखा कि योग 15 किसी भी नौकरीपेशा जातक की कुंडली पर नहीं लग रहा है, तो उपरोक्त तालिका में संख्या15 देखेंगे, तो द्वादशेश का VI, IX या XII भाव में स्थित होने का योग है। X-एक्सिस कुंडलियों या प्रारूपों की संख्या है।

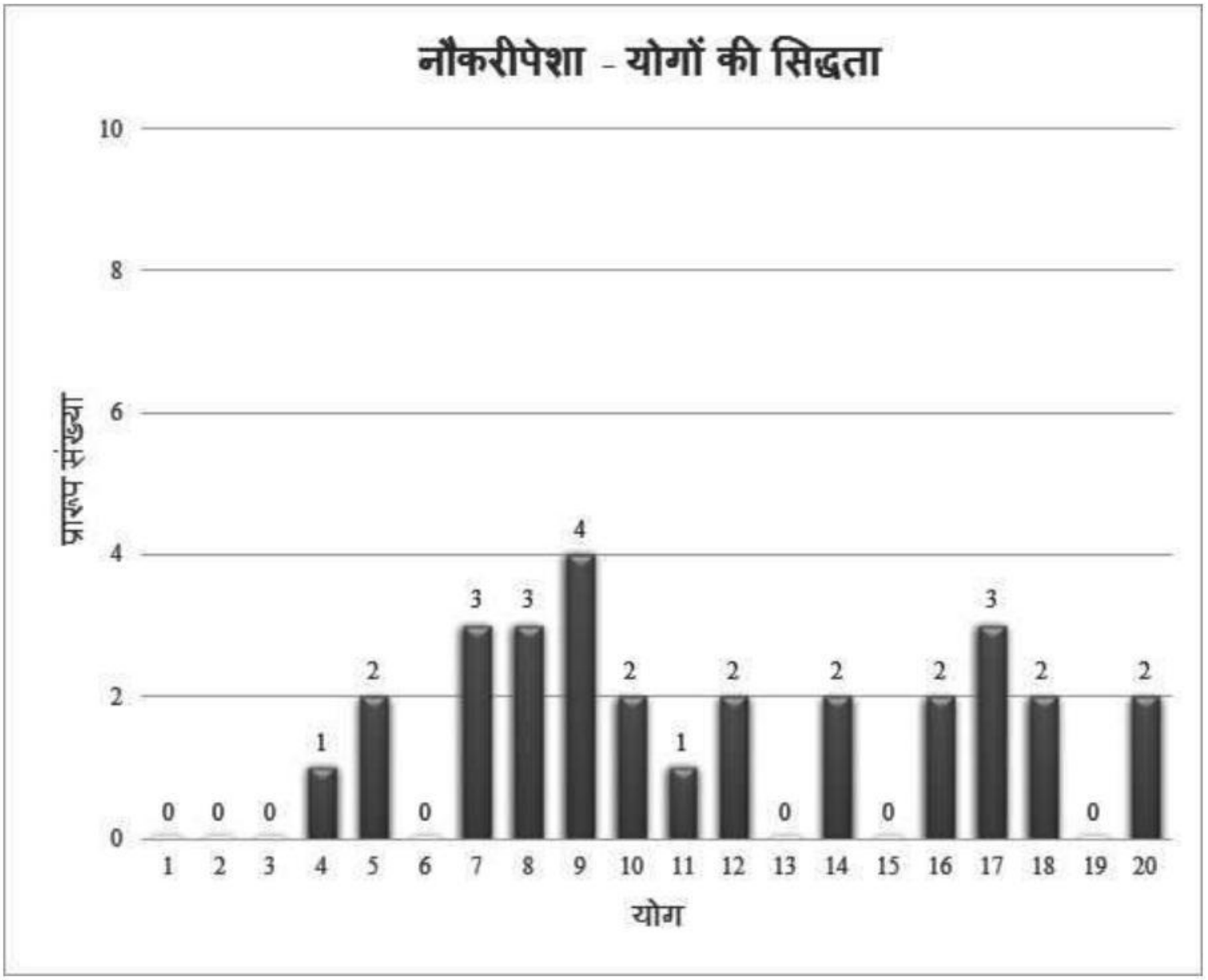

4. निष्कर्ष

व्यवसायी बनने के उपरोक्त 20 योगों को महत्त्व के आधार निम्न रूप से सूचीबद्ध किया जा सकता है :

- योग 10, सभी व्यवसायियों की कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह योग केवल 2 कुंडलियों पर लगा।
- योग 16 और 20, व्यवसायियों की 8 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह योग केवल 2 कुंडलियों पर लगा।
- योग 1, 2, 3, 6, 13, 15 और 19, व्यवसायियों की कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह किसी भी कुंडली पर नहीं लगा।
- योग 8, व्यवसायियों की 7 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह केवल 3 कुंडली पर ही लगा।
- योग 7 और 18, व्यवसायियों की 6 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह क्रमशः 3 और 2 कुंडलियों पर ही लगा।

- योग 4, व्यवसायियों की 4 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह केवल 1 कुंडली पर ही लगा।
- योग 11, 12 और 14 का महत्त्व उपरोक्त से कम सिद्ध हुआ क्योंकि ये व्यवसायियों में क्रमशः 3, 5 और 5 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह क्रमशः 1, 2 और 2 कुंडलियों पर लगा ।
- योग 5, 9 और 17 का कोई महत्त्व नहीं सिद्ध हुआ क्योंकि ये व्यवसायियों में क्रमशः 2, 5 और 5 कुंडलियों पर लगा, जबकि नौकरीपेशा जातकों में यह क्रमशः 2, 4 और 3 कुंडलियों पर लगा।

व्यवसायियों के प्रारूपों पर जो साहित्यिक सूत्र सिद्ध हुए और जो नवीन सूत्र लगे, उनकी सूची निम्न हैं:

सिद्ध साहित्यिक सूत्र	सूर्य मेष राशि में, चन्द्र सप्तम भाव में, मंगल मेष राशि में, शनि सप्तम भाव में, लग्नेश एकादश भाव में, चन्द्र से बुध तृतीय भाव में और चन्द्र-शुक्र की युति
सिद्ध नवीन सूत्र	सूर्य वृष तथा मीन में, सूर्य VI तथा VII में, चन्द्र सिंह तथा मकर में, चन्द्र X में, मंगल वृष में, मंगल IV, VII, VIII तथा X में, शनि IX तथा XII में, बृहस्पति मेष, वृष, मिथुन, कुम्भ तथा मीन में, शुक्र मेष एवं कुम्भ में, शनि का संबंध IX से, लग्नेश VI तथा VII में, द्वितीयेश V, VII तथा VIII में, तृतीयेश IV तथा VII में, एकादशेश IV, VI, VIII तथा X में, द्वादशेश VI तथा IX में, चन्द्र से बुध II, V तथा X, चन्द्र से शुक्र V में,चन्द्र से राहु IV, IX तथा XII, बुध से शनि IV, VIII तथा IX और शनि से राहु III, IV, VI तथा VIII

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. वर्मा, कल्याण. (2013). सारावली. (म. चतुर्वेदी, टीकाकार). नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
2. पराशर. (2000). बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः मास्टर खिलाड़ी लाल संकटा प्रसाद।
3. जैमिनी. (2014). जैमिनी सूत्रम् (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्लीः रंजन पब्लिकेशन्स।
4. वराहमिहिर. (2014). बृहज्जातकम्. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्लीः रंजन पब्लिकेशन्स।
5. मानसागर. (2008). मानसागरी. (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार।
6. मन्त्रेश्वर. (2010). फलदीपिका. (सुशील अग्रवाल, टीकाकार). नई दिल्लीः अग्रवाल पब्लिशर्स।
7. वेंकटेश. (2004). सवार्थ चिंतामणि. (गुरु प्रसाद गौर, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः चौखम्बा सुभारती प्रकाशन।
8. वैधनाथ. (2014). जातक पारिजात. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्लीः रंजन पब्लिकेशन्स।
9. ढुण्ढिराज. (2008). जातकाभरणम् (सीताराम झा टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार।
10. पाठक, महादेव. (2014). जातकतत्त्वम् (हरिशंकर पाठक, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः चौखम्बा सुभारती प्रकाशन।
11. गौर, ऐ. के. कर्नल. (2011). ज्योतिष और आजीविका. नई दिल्लीः वाणी पब्लिकेशन्स।
12. कुमार, कृ. (2005). आजीविका विचार. नई दिल्लीः अल्फा पब्लिकेशन्स।